डॉ॰ जे॰ एस॰ नौलखा
एसो॰ प्रोफेसर

M.A. II Sem. IV Paper

DOMS Page No. 1
Date / /

पुरातत्व, प्राक् एवं आद्य इतिहास

→ पुरातत्व — 'पुरातत्व' शब्द अंग्रेजी के ARCHAEOLOGY (आर्कियोलॉजी) शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है।

→ 'आर्कियोलॉजी' शब्द यूनानी भाषा के 'आर्किओस' एवं 'लोगोस' नामक दो शब्दों को मिलाकर बना है।

→ 'आर्किओस' का अर्थ है – 'पुरातन' (प्राचीन)
'लोगोस' का अर्थ है – 'ज्ञान' अतः 'पुरातत्व' शब्द का अर्थ हुआ – प्राचीन ज्ञान / पुरातन ज्ञान।

→ पुरातत्व का अर्थ – पृथ्वी के गर्भ में छिपी हुई प्राचीन संस्कृतियों को उजागर करना एवं नित-नये तथ्यों की खोज से इतिहास के ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि करना ही 'पुरातत्व' कहलाता है।

→ क्रॉफोर्ड की परिभाषा — "पुरातत्व विज्ञान की वह शाखा है, जिससे अतीत के गर्भ में विलुप्त मानव संस्कृतियों का अध्ययन किया जाता है और व्यवहार में उसका प्रभाव एवं उद्देश्य आदिकालीन तथा प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का विवरण प्रस्तुत करना है।"

→ गार्डन चाइल्ड के अनुसार — "पुरातत्व सुस्पष्ट भौतिक अवशेषों के माध्यम से मानव के क्रिया-कलापों के अध्ययन को कहा जा सकता है।"

→ ग्रॉहम क्लॉर्क के अनुसार – 'पुरातत्व' को मानव-अतीत के इतिहास की रचना करने के लिए पुरावशेषों के क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

Scanned with CamScanner

→ ह्वीलर मॉर्टीमर के अनुसार- 'पुरातत्व' प्रत्यक्षतः तथ्यों की खोज करता है। इसके रिकार्ड में प्राप्त सामग्रियों को वह कल्पना के सहारे सजीव करता है और उनके आधार पर सभ्यता की लुप्त कड़ी को सुलझाता है"

→ प्राक् इतिहास- लेखन कला के ज्ञान से पूर्व के मानवकृत इतिहास को प्राक्-इतिहास (Pre-history) कहा जाता है।

→ आद्य-इतिहास- लेखन-कला के ज्ञान के पश्चात् ऐसे काल-(Proto-history) खण्ड को आद्य-इतिहास कहते हैं जिसमें लेखन सामग्री का पूर्णरूपेण अर्थ स्पष्ट न हो सका एवं ऐसे इतिहास के नायक आदिमानव, लेखन कला से तो परिचित थे परन्तु वर्तमान में उससे सम्बन्धित प्रमाण अधिकाधिक उपलब्ध नहीं है। हड़प्पा-संस्कृति आद्य-इतिहासकालीन कालखण्ड का उदाहरण है।

→ भारतीय पुराविद् एच०डी० संकालिया के अनुसार- "पुरातत्व प्रधानतः पुरावशेषों का ही अध्ययन है"

→ एन० सी० नेल्सन के अनुसार- 'पुरातत्व' मनुष्य तथा उसकी संस्कृति की उत्पत्ति, प्राचीन अवस्था तथा विकास से सम्बन्धित समस्त अवशेषों का अध्ययन है।

→ डॉ० विश्वाष्ट के अनुसार- 'पुरातत्व' मानव ज्ञान की वह शाखा है, जिसने पृथ्वी के नीचे दबी खण्डहरों में सिमटी प्राचीन मानव संस्कृति के अवशेषों को उखाड़कर विश्वसनीय विषय-सामग्री प्रस्तुत की है।

Scanned with CamScanner

1. सिन्ध और राजस्थान की प्राक्-हड़प्पा संस्कृतियाँ

→ कालक्रम (Chronology) की दृष्टि से सिन्धु-सभ्यता की पूर्ववर्ती विकसित हुई ग्रामीण संस्कृतियों को 'प्राक्-हड़प्पा संस्कृति' या 'प्राक्-सैन्धव संस्कृति' (Pre-Harappan Cultures) कहा जाता है।

→ पाकिस्तानी पुराविद् मुहम्मद रफीक मुग़ल ने इसको "प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृति" (Early Harappan Culture) नाम दिया।

प्राक्-हड़प्पा पुरास्थल	प्रान्त
मुण्डीगाक	अफगानिस्तान
नाल	बलूचिस्तान
किले गुल मुहम्मद	बलूचिस्तान
कुल्ली	बलूचिस्तान
मेहरगढ़	बलूचिस्तान
आमरी	सिन्ध
कोटदिजी	सिन्ध
हड़प्पा	पंजाब
सराय खोला	पंजाब
जलीलपुर	पंजाब
कालीबंगाँ	राजस्थान (भारत)
बणावली	हरियाणा (भारत)
राखीगढ़ी	हरियाणा (भारत)

सिन्ध-क्षेत्र की प्राक्-हड़प्पा संस्कृति

→ **आमरी** – आमरी पुरास्थल सिन्ध प्रान्त में मोहनजोदड़ो से 160 किमी. दक्षिण में सिन्धु नदी के बांये तट/पश्चिमी तट पर स्थित है।

→ आमरी की खोज एवं सर्वेक्षणात्मक उत्खनन एन. जी. मजूमदार ने सन् 1929 ई. में किया था। कालान्तर में जे. एम. कज़ाल ने सन् 1959-62 में यहाँ अपेक्षाकृत विस्तृत स्तर पर उत्खनन कराया, जिसके परिणाम-स्वरूप 5 सांस्कृतिक कालों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई।

→ हस्त निर्मित और चाक निर्मित, दोनों ही प्रकार के मृद्भाण्ड आमरी से

Scanned with CamScanner

* आमरी से भेड़े की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं।

प्राप्त हुए हैं। मृदभाण्डों पर ज्यामितीय पैटर्न की डिजाइन के साथ-साथ पीपल के पत्ते, मृग के सींग इत्यादि की आकृति भी प्राप्त होती है।

→ **कोटदिजी** : कोटदिजी नामक महत्वपूर्ण पुरास्थल सिन्ध प्रान्त में मोहनजोदड़ो से लगभग 40 किमी. पूर्व में सिन्धु नदी के बायें तट पर स्थित है।

→ सन् 1955 ई. में पाकिस्तान के पुरातत्व विभाग के निदेशक फजल अहमद ने इस पुरास्थल की खोज की और सन् 1955-58 के मध्य यहाँ पर उत्खनन कराया।

→ कोटदिजी के उत्खनन में कुल 16 स्तर प्रकाश में आये।
→ भली-भाँति तैयार मिट्टी से चाक पर बने, पतले और सुन्दर सुन्दर कोटदिजी से प्राप्त मृदभाण्डों की पृष्ठभूमि गुलाबी से लेकर लाल रंग की है।

→ कूबड़दार बैल (Humped Bull) की एक अत्यन्त सुन्दर मृण्मूर्ति प्राप्त हुयी है।

→ सींग वाले देवता की आकृति को छोड़कर अन्य पशुओं और वनस्पतियों का अंकन मृदभाणों पर नहीं प्राप्त होता है।

राजस्थान की प्राक्-हड़प्पा संस्कृति

→ **कालीबंगा** — उत्तरी राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के बांये तट पर स्थित है। 1950-53 में सर्वप्रथम अमलानन्द घोष ने कालीबंगा के प्राचीन ऐतिहासिक टीलों का अन्वेषण किया था। सन् 1959-60 से बी. बी. लाल एवं बी.के. थापर ने लगभग एक दशक तक उत्खनन कार्य किया।

→ कालीबंगा में रक्षा-प्राचीर के निर्माण में 30×20×10 सेमी. आकार की कच्ची ईंटों का प्रयोग किया गया था, जिसका अनुपात 3:2:1 का था।
→ कालीबंगा से जौ की खेती के प्रमाण मिले हैं।

→ कालीबंगा के प्राक्-सैंधव सांस्कृतिक काल की सबसे विशिष्ट उपलब्धि 1 जुते हुए खेत के साक्ष्यों का मिलना है। सम्भवतः एक ही खेत में दो फसलों की एक साथ बुआई करने के फलस्वरूप इस प्रकार के कूंड़ के निशान बने होंगे।

हड़प्पा-संस्कृति (Harappan Culture)

→ सर्वप्रथम 'हड़प्पा' की खोज 1921 ई० में दयाराम साहनी ने की।
→ जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इस संस्कृति को 'सैन्धव सभ्यता' कहकर पुकारा।
→ जॉन मार्शल की पुस्तक का नाम- "Mohenjo-daro and the Indus Civilization"
→ मार्टीमर व्हीलर की पुस्तक - "Civilization of the Indus Valley and Beyond"
→ यह सभ्यता कांस्य युगीन थी।
→ गॉर्डन चाइल्ड ने सिन्धु सभ्यता को 'प्रथम नगरीय क्रान्ति' कहा।
→ 1922 में जॉन मार्शल ने मोहनजो-दड़ो की खोज की।

प्रान्त	स्थल
→ सिन्ध	मोहनजोदड़ो, चांहुदड़ो, अलीमुराद, आमरी, कोटदिजी, जुदैरजोदड़ो।
→ पंजाब	हड़प्पा, डेराइस्माइल खाँ, रहमानढेरी, गुमला, जलीलपुर।
→ बलूचिस्तान	सुत्कागेंडोर, सुत्काकोह, बालाकोट, डाबरकोट, रणागुंडई।
→ अफगानिस्तान	शोर्तुघई, मुण्डिगाक।

भारतीय क्षेत्र में स्थित स्थल ⇒

हरियाणा - राखीगढ़ी, सिसवल, कुणाल, बणावली, मितथल।

पंजाब - रोपड़, कोटलानिहंगखान, चक 86, संघोल, बाड़ा,

जम्मू-कश्मीर - माण्डा।

Scanned with CamScanner

राजस्थान – कालीबंगा, बालाथल, तरखानवाला डेरा।
गुजरात – रंगपुर, लोथल, सुरकोटदा, धौलावीरा, रोजदी, भगतराव, कुन्तासी, प्रभासपाटन।
उत्तर प्रदेश – आलमगीरपुर, बड़गाँव, हुलास, माण्डी, सनौली।
महाराष्ट्र – दायमाबाद।

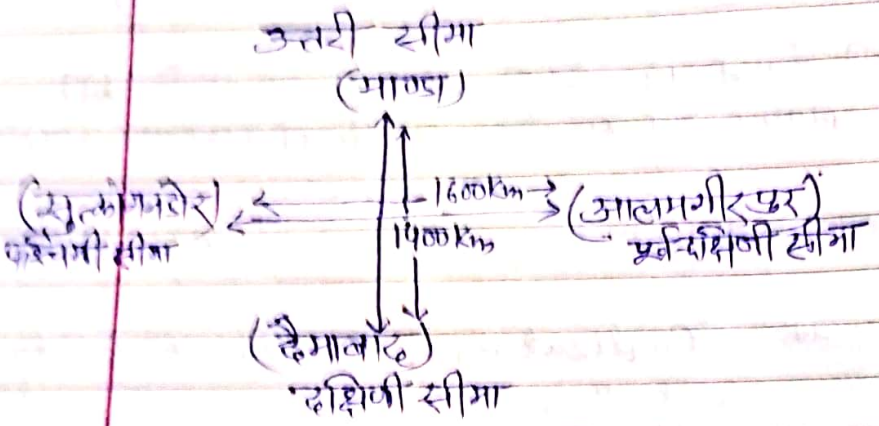

महत्वपूर्ण तथ्य

→ हड़प्पा से लिंग पूजन के सर्वाधिक प्रमाण मिले हैं।
→ मोहनजो-दड़ो से सूती वस्त्र के प्रयोग के निश्चित प्रमाण मिले हैं।
→ सिन्धु घाटी सभ्यता के लिए मेसोपोटामिया के अभिलेखों में 'मेलुहा' नाम प्रयुक्त हुआ है।
→ हड़प्पा के पश्चिमी भाग में दुर्ग था, जबकि पूर्वी भाग में रिहायशी इलाका था।
→ मोहनजोदड़ो के विपरीत हड़प्पा का अन्नागार दुर्ग से बाहर स्थित था।
→ हड़प्पा से एक मुहर पर सांप दबाए गरूड़ का चित्रण मिलता है।
→ हड़प्पा से ही सिर के बल खड़ी एक नग्न स्त्री का चित्रण प्राप्त होता है, जिसके गर्भ से एक पौधा निकलता दिखाया गया है।
→ मोहनजोदड़ो से सर्वाधिक संख्या में मुहरें मिली हैं, जबकि सर्वाधिक अभिलेखयुक्त मुहरें हड़प्पा से प्राप्त हुई हैं।
→ मोहनजोदड़ो से एक सड़क के पक्कीकरण का साक्ष्य मिलता है।

→ मोहनजो-दड़ो सिन्धी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है - "मृतकों का टीला"।

→ मोहनजोदड़ो की अधिकांश जातियाँ भूमध्य सागरीय प्रजाति की प्रतीत होती हैं।

→ लोथल का विभाजन दुर्ग और निचले शहर में नहीं है।

→ लोथल से वृत्ताकार तथा चौकोर अग्निवेदिका के साक्ष्य मिले हैं।

→ लोथल से 3 युग्म समाधि मिली हैं। यहीं से एक 'सती' का उदाहरण भी मिलता है।

→ लोथल की मुहरों एवं बर्तनों पर बतख का चित्रण सर्वाधिक है।

→ लोथल के एक मृद्भाण्ड पर पंचतन्त्र की चालाक लोमड़ी जैसे कथानक का अंकन हुआ है।

→ कालीबंगा से प्राक्-हड़प्पा और विकसित हड़प्पा दोनों चरणों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

→ कालीबंगा से ईंट के चबूतरे पर सात हवनकुण्ड का साक्ष्य मिला है।

→ कालीबंगा से कपाल चिकित्सा के प्रमाण मिले हैं।

→ चान्हूदड़ो से प्राक्-हड़प्पा, विकसित हड़प्पा एवं उत्तर-हड़प्पा तीनों चरणों के प्रमाण मिले हैं।

→ मैके महोदय ने चान्हूदड़ो से मनके बनाने का कारखाना खोजा।

→ चान्हूदड़ो से मिट्टी की पकी हुयी नालियों के साक्ष्य मिले हैं।

→ चान्हूदड़ो से वक्राकार ईंटों की प्राप्ति के प्रमाण मिले हैं।

→ मोहनजोदड़ो से सैन्धव सभ्यता का सर्वाधिक भारी बटखरा (10.9 ग्राम) पाया गया है।

→ वस्त्र निर्माण का प्राचीनतम साक्ष्य मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुआ है।

→ मलेरिया बीमारी का प्राचीनतम साक्ष्य मोहनजोदड़ो से मिला है।

→ चाँदी का प्राचीनतम साक्ष्य मोहनजोदड़ो से मिला है। यहाँ से चाँदी का कलश एवं शिलाजीत पाया गया है।

→ बहुमंजली इमारतों के प्रमाण, पुरोहित आवास, बड़ी संख्या में कुँओं की प्राप्ति, कांसे की नर्तकी, पशुपति की मुहर, वृहत स्नानागार इत्यादि प्रमाण मोहनजोदड़ो से मिले हैं।

→ मोहनजोदड़ो से कोई कब्रिस्तान नहीं मिला है।

Scanned with CamScanner

लोथल से 3 युग्म शवाधान के प्रमाण मिले हैं।

→ लोथल से प्राप्त गोदीबाड़ा (बन्दरगाह) सैन्धव सभ्यता की प्रमुख खोज है।

→ लोथल से हाथी दाँत का बना स्केल (पटरी) प्राप्त हुआ है।

→ सुनामी जैसे समुद्री तूफान का प्राचीनतम प्रमाण धौलावीरा से मिलता है।

→ पालिशदार श्वेत पाषाण-स्तम्भ धौलावीरा से मिले हैं।

→ धौलावीरा का जल-प्रबन्धन अतिविशिष्ट है। यहाँ 16 से अधिक तालाब मिले हैं, जिनमें वर्षा के जल का संचय किया जाता था।

→ हड़प्पा सभ्यता के अन्य नगरों के विपरीत धौलावीरा का विभाजन त्रिस्तरीय है, जिसमें दो नगरों के मध्य तीसरा नगर भी विद्यमान है तथा तीनों भाग दुर्गीकृत हैं।

→ सैंधव लिपि का सबसे बड़ा अभिलेख (10 अक्षर) यहीं से प्राप्त हुआ है।

⇒ सुरकोटड़ा से घोड़े की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं।

→ सुरकोटड़ा से शवाधान की एक नयी विधि -कलश शवाधान के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

⇒ स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में सबसे पहले 'रोपड़' नामक हड़प्पाई स्थल का उत्खनन हुआ।

→ रोपड़ से मानव के साथ कुत्ते के दफनाए जाने का साक्ष्य मिलता है।

⇒ बनावली से सैन्धव संस्कृति के तीनों स्तरों प्राक्, विकसित, एवं उत्तर हड़प्पा) के प्रमाण मिले हैं।

→ बनावली से मिट्टी का हल एवं बटखरा मिले हैं।

→ बनावली से तांबे की कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है।

→ बनावली से नाली का अभाव प्रमाणित होता है।

Scanned with CamScanner

⇒ आलमगीरपुर से रोटी बनाने का चकला प्राप्त होता है।
→ आलमगीरपुर के बर्तनों पर मोर तथा गिलहरी का अंकन है।
→ सूती कपड़े का साक्ष्य आलमगीरपुर से मिला है।

⇒ भारत में राखीगढ़ी सबसे बड़ा सैन्धव पुरास्थल है।

→ कुणाल से दो चाँदी के मुकुट तथा सोने के गहने मिले हैं।
→ माण्डी पुरास्थल से एकसाल गृह (Mint House) का प्रमाण मिला है।
→ दुब्लास से गेंहूँ की खेती किए जाने के साक्ष्य मिले हैं।
→ रंगपुर से धान की भूसी और बाजरे के साक्ष्य मिले हैं।
→
→ रोजदी से हाथी के अवशेष मिले हैं।

⇒ नौसारो (बलूचिस्तान क्षेत्र) से स्त्रियों की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनके माँग में सिन्दूर है।

⇒ सिन्धु सभ्यता की मुहरों पर सिंह, ऊँट, तथा घोड़े का अंकन नहीं मिलता है।

⇒ हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की मुद्रा पर गाय की आकृति नहीं मिलती है।

→ कपास की खेती के प्राचीनतम साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त हुये हैं।
→ हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख फसलें - गेंहूँ तथा जौ थीं।
→ हड़प्पा सभ्यता में सर्वाधिक सेलखड़ी से निर्मित मुहरें प्राप्त हुई हैं।
→ मुहरों पर सर्वाधिक अंकन पीपल की पत्ती का मिलता है।
→ स्टुअर्ट पिग्गट महोदय ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को "जुड़वाँ राजधानी" कहा।
→ सैन्धव समाज को मातृसत्तात्मक माना गया है।
→ बालाकोट और लोथल सीप उद्योग के केन्द्र थे।

Scanned with CamScanner

सैन्धव सभ्यता के पतन से सम्बन्धित विभिन्न मत

मत — विद्वान

→ आर्य आक्रमण — गॉर्डन चाइल्ड, व्हीलर, पिग्गट, मैके।

→ बाढ़ — मार्शल, एस० आर० राव।

→ मलेरिया — कैनेडी

→ नदियों के मार्ग-परिवर्तन — डी० एच० लैम्ब्रिक, एम० एस वत्स।

→ जलवायु परिवर्तन — ऑरेल स्टाइन एवं अमलानन्द घोष।

→ भूतात्विक परिवर्तन — एम० आर० साहनी, राइक्स

→ अदृश्य भाप या भौतिक रासायनिक परिवर्तन — एम० दिमित्रयेव

→ विदेशी व्यापार में गतिरोध — डब्लू० एफ० अल्ब्राइट

→ पारिस्थितिकी असन्तुलन — फेयर सर्विस

Scanned with CamScanner

ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियाँ
अहार संस्कृति एवं मालवा संस्कृति

अहाड़ संस्कृति

जिन संस्कृतियों में ताँबे के औजारों के साथ ही साथ पत्थर के बने हुए उपकरणों का प्रचलन मिलता है, उन्हें प्रायः ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियाँ कहा जाता है। भारतीय ताम्र-पाषाणिक संस्कृतियाँ ग्राम्य-संस्कृतियाँ हैं।

→ दक्षिण-पूर्व राजस्थान में अरावली पर्वत श्रृंखला के पश्चिम में स्थित क्षेत्रों में एक ताम्र-पाषाणिक संस्कृति का उदय हुआ, जिसे अहाड़-संस्कृति के नाम से जाना जाता है।

→ 'अहाड़' नामक पुरास्थल राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित है, जिसका सर्वप्रथम उत्खनन 1954-55 ई० में आर०सी० अग्रवाल द्वारा किया गया।

→ 'अहाड़' नामक पुरास्थल को स्थानीय लोग 'धूलकोट' के नाम से जानते हैं।

→ परम्परा के अनुसार इस पुरास्थल का नाम 'ताम्रवती' है।

→ इस संस्कृति के अन्य दो स्थल – गिलुण्ड (उदयपुर जिले में स्थित) और कायथा (उज्जैन जिला, म०प्र०) हैं।

→ इस संस्कृति से सम्बन्धित बहुसंख्यक पुरास्थल दक्षिण-पूर्व राजस्थान में 'बनास' और उसकी सहायक नदियों की घाटियों में स्थित हैं, इसीलिए, इस संस्कृति को "बनास संस्कृति" भी कहा जाता है।

→ श्वेत रंग से चित्रित कृष्ण-लोहित पात्र-परम्परा (Black and Red ware) को अहाड़ संस्कृति की विशिष्ट मृद्भाण्ड परम्परा माना जाता है।

Scanned with CamScanner

→ अहाड़ संस्कृति के विभिन्न चरणों से अत्यधिक संख्या में ताम्र-उपकरणों की प्राप्ति हुई है।

→ अहाड़ संस्कृति के लोग खेतड़ी की खानों से ताँबा प्राप्त करते थे।

→ गिलुण्ड से मकानों के निर्माण में पकी ईंटों के प्रयोग के साक्ष्य भी मिले हैं।

→ धान की खेती के प्रमाण गिलुण्ड से मिले हैं।

→ अहाड़ संस्कृति का कालक्रम 1700 ई॰पू॰ से 1500 ई॰पू॰ तक है।

→ अहाड़ से ताँबे की चिपटी कुल्हाड़ियाँ बहुतायत में मिली हैं।

मालवा की ताम्र-पाषाणिक संस्कृति

→ मालवा ताम्र-पाषाणिक संस्कृति के प्रमुख पुरास्थल हैं — नवदाटोली, माहेश्वर, नागदा, कायथा, एरण (सभी मध्यप्रदेश) सोनगाँव, चन्दोली, प्रकाश, इनामगाँव, दायमाबाद (सभी महाराष्ट्र में)

→ नवदाटोली म॰प्र॰ के खरगोन जिले में नर्मदा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है।

→ माहेश्वर म॰प्र॰ के खरगोन जिले में नर्मदा नदी के उत्तरी तट पर स्थित है।

→ मालवा संस्कृति की विशिष्ट पात्र-परम्परा — "काले रंग से चित्रित लाल रंग" की पात्र-परम्परा है।

→ मध्यप्रदेश में मालवा संस्कृति के लोग प्रायः गोलाकार मकान बनाते थे, जबकि पश्चिमी महाराष्ट्र के लोग आयताकार मकानों का निर्माण करते थे।

Scanned with CamScanner

→ मालवा संस्कृति का काल-क्रम 1700 ई०पू० से 1200 ई०पू० के मध्य रखा गया है।

→ गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति
Ochre Coloured Pottery [O.C.P.]

→ 'गैरिक' का अर्थ है—'गेरुआ' (इस संस्कृति के बर्तनों का रंग गेरुआ होता था।)

→ अंग्रेजी में इस संस्कृति को Ochre Coloured Pottery (ओकर कलर्ड पॉटरी) O.C.P. कहते हैं।

→ सर्वप्रथम 1949 ई० में बी.बी. लाल महोदय को बदायूँ जिले में स्थित 'बिसौली' एवं बिजनौर जिले में स्थित 'राजपुर परसू' नामक पुरास्थलों से गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति के बर्तन मिले।

→ इस संस्कृति के प्रमुख पुरास्थल हैं — हस्तिनापुर (मेरठ), लालकिला (बुलन्दशहर), अतरंजीखेड़ा, जखेड़ा (एटा) सैफई (इटावा), बड़ागाँव, अंबखेड़ी, बहदराबाद (सहारनपुर), अहिच्छत्र (बरेली) श्रृंगवेरपुर (प्रयागराज) नोह (भरतपुर, राजस्थान), कटपलांव (जालंधर, पंजाब)।

→ गैरिक मृदभाण्ड अत्यन्त नाजुक एवं क्षणभंगुर (छूने मात्र से ही टूटने लगते हैं) होते थे।

→ प्रमुख पात्र-प्रकार हैं — कुल 18 प्रकार के बर्तन प्राप्त हुए हैं — मोटी गढ़न के बड़े आकार के हौदे (नांद), कटोरेनुमा ढक्कन, साधार तश्तरी, तसले, बटी हुई रस्सी की छाप के घड़े, पेंदेदार कटोरे, बड़े-बड़े मटके इत्यादि।

→ कालानुक्रम — 1500 - 1300 ई०पू०

Scanned with CamScanner

चित्रित धूसर पात्र-परम्परा
Painted Grey Ware (P.G.W.)

→ सर्वप्रथम चित्रित धूसर मृदभाण्ड बरेली के 'अहिच्छत्र' नामक पुरास्थल से 1940-44 ई० के मध्य हुए उत्खनन से प्राप्त हुए।

→ चित्रित धूसर मृदभाण्ड (P.G.W.) सलेटी रंग के हैं और इनके ऊपर काले रंग से चित्रण किया गया है।

→ प्रमुख पुरास्थल हैं – अहिच्छत्र, अतरंजीखेड़ा, हस्तिनापुर, कौशाम्बी, मथुरा, श्रावस्ती (उत्तर प्रदेश) पानीपत, इन्द्रप्रस्थ, सोनीपत (हरियाणा) माण्डा (जम्मू-कश्मीर), उज्जैन (म०प्र०), तिलौराकोट (नेपाल) वैशाली (बिहार), लाखियोपीर (सिन्ध प्रान्त, पाकिस्तान), रोपड़ (पंजाब) नोह (राजस्थान)

→ प्रमुख पात्र-प्रकार → कटोरे, थालियाँ, लोटा, तसले, मटके, मर्तबान इत्यादि।

→ कालानुक्रम – 1200 ई०पू० से 800 ई०पू० के मध्य।

→ हस्तिनापुर से चित्रित धूसर पात्र-परम्परा के स्तरों से घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं।

→ भगवानपुरा (कुरुक्षेत्र जिला, हरियाणा), दधेरी (जालंधर, पंजाब) माण्डा (जम्मू) पुरास्थलों से हड़प्पा संस्कृति (Late Harappan) और चित्रित धूसर संस्कृति (P.G.W.) के बीच आच्छादन (overlapping) के प्रमाण मिले हैं। अर्थात् Late Harappan और P.G.W. संस्कृति के लोग एक समय पर एक साथ रहे होंगे।

P.G.W. संस्कृति को लौह-युगीन संस्कृति माना गया है। राजस्थान के 'नोह' नामक पुरास्थल से 'जौ' की खेती के प्रमाण मिले हैं।

→ भगवानपुरा से पकी मिट्टी के बने घरों के प्रमाण मिले हैं।

उत्तरी काली चमकीली मृदभाण्ड परम्परा [N.B.P.W.]
(Northern Black Polished Ware)

→ इसे "उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड" भी कहा जाता है। उत्तरी कृष्णमार्जित शब्द से ही स्पष्ट है कि इस प्रकार के मृदभाण्ड उत्तर भारत की ही देन हैं। इनका रंग काला है, इसीलिए 'कृष्ण' कहा गया है। 'मार्जित' शब्द का अर्थ है 'चमकीला'।

→ सर्वप्रथम 1934 ई० में मार्शल महोदय को तक्षशिला के भीर टीले से उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड (N.B.P.W.) प्राप्त हुए थे।

→ मार्शल ने इस पात्र-परम्परा को 'काली काचित पात्र-परम्परा' (Black Glazed Ware) कहा।

→ व्हीलर और कृष्णदेव पुराविदों ने इस मृदभाण्ड परम्परा को 'उत्तरी काली चमकीली मृदभाण्ड (N.B.P.W.) कहा।

→ इस मृदभाण्ड परम्परा का प्रसार क्षेत्र - उत्तर पश्चिम में बेग्राम (अफगानिस्तान), तक्षशिला, चारसद्दा, उदयग्राम (पाकिस्तान), तिलौराकोट (नेपाल), प्रभासपाटन (गुजरात), नासिक और बहाल (महाराष्ट्र), तामलुक, चन्द्रकेतुगढ़ (पश्चिमी बंगाल), बानगढ़ तथा पहाड़पुर (बांग्लादेश), शिशुपालगढ़ (उड़ीसा), नागार्जुनकोण्डा (आन्ध्रप्रदेश), सारनाथ, राजघाट, झूँसी, कौशाम्बी, मथुरा, अहिच्छत्र, हस्तिनापुर अतरंजीखेड़ा, जखेड़ा (उत्तर प्रदेश), पटना, बक्सर (बिहार) इत्यादि।

→ N.B.P.W. मृदभाण्ड अधिकांशतः काले रंग के मिलते हैं, लेकिन सुनहरे, चाकलेटी, गुलाबी, नीले रंग के भी बर्तन मिले हैं।

→ इन मृदभाण्डों पर जो चमक होती है, उसमें 13% फेरस ऑक्साइड का लेप होने के कारण है।

→ काल-निर्धारण - 600 ई०पू० - 200 ई०पू० के मध्य।

—x—